पेड़ी प्रबन्धन

यदि वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाया जाये तो पेड़ों की पैदावार काफी अच्छी ली जा सकती है।

- गन्ना प्रजातियों जैसे कोशा 767 को 0238, ,COJ-85 ,COJ-88आदि गन्ना प्रजातियों की पेड़ी अच्छी होती है।
- गन्ने की कटाई जमीन की सतह से ही करें ताकि ठूंठ न रहे।
- अधिक से अधिक फुटाव के लिये इथोफोन का छिड़काव वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया है। शरद ऋतु में इथोफोन के छिड़काव से तापमान के विपरीत प्रभाव को काफी कम किया जा सकता है।

इथोफोन का घोल तैयार करना एवं छिड़काव -

- 20 मि0ली0 इथोफोन (इथेरल) + 2 कि0ग्रा0 यूरिया को 200 ली0 पानी में घोल बनायें और इस घोल को पेड़ी फसल के ठुठों पर एक सप्ताह के अन्दर छिड़काव करें। छिड़काव के समय नमी का होना आवश्यक है। (15 ली0 छिड़काव यंत्र में 1.5 मि0ली0 इथोफोन मिलायें)
- पेड़ी फसल को रोगों के संक्रमण एवं कीटों से बचाने हेतु इसी घोल में 100 ग्राम कार्बेन्डाजिन तथा 300 मि0ली0 क्लोरोपायरीफास भी मिलायें।

गन्ने की सूखी पत्तियाँ न जलायें -

- पत्तियों को गन्ने की लाइनों के बीच में एक सार बिछायें।
- पत्तियों के सड़ने पर भूमि को जैवांश पदार्थ मिलता है।

- नमी का संरक्षण होता।
- 10कि0ग्रा0 यूरिया + 10 कि0 सुपर फास्फेट + 2 कि0ग्रा0 ट्राइकोडर्मा का प्रयोग कर सिंचाई कर दें। इससे पत्तियाँ जल्दी सड़ जायेगीं।

पुरानी मेड़ों को तोड़ना -

- पुरानी जड़ों को तोड़ने एवं नई जड़ों के निकलने तथा वायु संचार के लिये अति आवश्यक है।
- इसी स्थान पर जड़ों के पास खाद दी जानी चाहिए जिससे फसल द्वारा शीघ्र प्रयोग कर लिया जाये।

भरपूर खाद का प्रयोग करें -

- पेड़ी की फसल में पौधा फसल की अपेक्षा 25% खाद का प्रयोग अधिक करें।
- सुपर फास्फेट या फास्फेटिक खादो की सम्पूर्ण मात्रा मेड़ तोड़ते समय हल की सहायता से दें।
- पोटाश को तीन भागों मे दें। प्रथम भाग मेड़ तोड़ते समय फास्फेटिक खाद के साथ दूसरा एवं तीसरा भाग कल्ले फूटने एवं मिट्टी चढ़ाते समय एवं यूरिया को तीन भागों में क्रमशः फुटाव, कल्ले फूटने एवं मिट्टी चढ़ाते समय बांट कर दें।
- कल्ले फूटने तक मल्टी माइक्रोन्यूट्रियेंट के दो छिड़काव भी करें।
- 05 कि0ग्रा0 एजोटोबेम्टर / एजोस्पीरिलम तथा 5कि0ग्रा0 पी0एस0बी0 प्रति एकड़ 200 कि0ग्रा0 सड़ी गोबर की खाद में मिला कर फुटाव के समय लाइनों में दें।

खाली स्थानों को भरना -

- पेड़ी में 25-30% स्थान पेड़ी के न फूटने के कारण खाली रह जाते हैं।
- इन रिक्त स्थानों के भराव के लिये पॉली बैग पौधों द्वारा **या पहले तैयार पौधे या झुंड प्रत्यारोपण द्वारा भर देना** चाहिये। पौधा फसल की कटाई के साथ ही पॉलीबैग पौधे तैयार करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण -

- प्रत्येक सिंचाई के बाद गुड़ाई आवश्यक है।
- मेट्रीव्यूजीन 600ग्राम + 2,4 डी 500 ग्रा0 400 ली0 पानी के

घोल से छिडकाव दो बार आवश्यकतानुसार करें।

- छिड़काव करते समय पर्याप्त नमी होनी चाहिये।

सिंचाई आवश्यकतानुसार करें -

ध्यान दें- पानी की कमी की दशा में 2.5% यूरिया एवं 2.5% म्यूरेट ऑफ पोटाश (2.5 कि0ग्रा0 यूरिया + 2.5 कि0ग्रा0 म्यूरेट ऑफ पोटाश + 100 ली0 पानी) के घोल का छिड़काव करने से पौधों की सूखा सहन करने की क्षमता बढ़ जाती है।

खाली स्थान भरने के लिये पॉली बैग तैयार करना :-

- एक आँख का टुकड़ा पॉली बैग लगाकर तैयार किया गया पौधा पॉलीबैग पौधा कहलाता है।
- आँख का ऊपरी भाग 1/3 तथा निचला भाग 2/3 रखना चाहिये।
- पॉली बैग का आकार 6X4 इंच हो तथा उसमें 6-8 छेद हो।
- पॉली बेग हेतु बालू, मिट्टी तथा गोबर की अच्छी सड़ी खाद समान मात्रा में मिश्रित करें।
- पॉली बैग को 75% तक उक्त मिश्रित मिट्टी से भरें।
- एक आँख का टुकड़ा पॉली बैग में लम्बवत् अथवा समतल इस प्रकार रखें कि आँख ऊपर की ओर रहे।
- टुकड़े की आँख पर एक इंच मिश्रित मिट्टी डालें।
- पॉली बैग को सूखी पत्तियों से ढक दें ताकि अंकुरण होने तक नमी समुचित बनी रहे।
- एक दिन छोड़कर हजारे से हल्की सिंचाई करते रहें।
- दो-तीन सप्ताह बाद 70-95% अंकुरण होने पर सूखी पत्तियों को हटा दें।
- एक माह में पौध रोपड़ योग्य (चार - पाँच पत्तियाँ) हो जाती हैं।
- लाइनों में पौध से पौध की दूरी 45 से0मी0 रखते हुये पॉलीथीन हटाकर एवं पत्तियों को ऊपर से 1 इंच काट कर रोपाई कर देते हैं।